Living the LOTUS

Buddhism in Everyday Life

4
2018

VOL. 151

Founder's Essay

व्यक्ति जिसे सभी पसंद करते हैं

अप्रील माह का वसंत ऋतु नये मुठभेड़ों का मौसम है। चूँकि जापान में काम पर रखना और नौकरी स्थानान्तरण आमतौर पर वित्तीय वर्ष के कैलेंडर के अनुसार होता हैं। विशेष रूप से युवा लोग नए मालिकों और सहकर्मियों के साथ अपने व्यक्तिगत संबंधों के बारे में चिंता करते हैं। अपने आप को दूसरों के पसंदीदा करने का कोई तरीका खोजने का दर्द होता है, लेकिन ऐसा करने के लिए सबसे ज्यादा आवश्यक यह है कि हमें खुद को वास्तव में अन्य लोगों की तरह बनाना सीखना होता है।

बहुत से लोग इस तथ्य से परेशान हैं कि वे रोमानी वातावरण नहीं बना सकते हैं; लेकिन क्या ऐसे लोग अपने को दूसरों के समक्ष उनके अनुकूल छवि पेश करने के लिए बेताब रहते हैं? जो आप मियाँ मिट्ठु और बढ़चढ़ कर बोलते हैं, दूसरे ऐसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों पर भी कम ही ध्यान देते हैं। दूसरों को पसंद करना सीखने का आसान तरीका है, क्योंकि लोग उन्हें पसंद करते हैं जो स्वाभाविक रूप से उनको पसंद करते हैं।

बोधिसत्त्व जिन्हे अवलोकितेश्वर कहते हैं, उनका उल्लेख पुण्डरीक सूत्र में है। अपने तैंतिस पुनर्जन्मों में अवलोकितेश्वर कभी भी किसी की सहायता करने में विफल नहीं रहे हैं। बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर (संस्कृत में) का अर्थ दूसरों के हृदय में पैठकर उनकी इच्छाओं को जानना है।

ऐसे लोग हैं जो दूसरों के साथ तालमेल की कमी के कारण इस्तीफा दे देते हैं, क्योंकि वे बातचीत में पटु नहीं हैं और लोगों की चापलूसी करने में अक्षम हैं।फिर भी, हमें बोधिसत्त्व के करूणामयी शब्दों को समझना चाहिए कि समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा में है—अधिक बात करने से बेहतर अधिक सुनना अच्छा है। यदि आप किसी भी विषय पर किसी की बातों को सहानुभूतिपूर्वक सुन सकते हैं, आप एक ऐसे व्यक्ति बन जाएँगे जिसे हर कोई पसंद करेगा।

From *Kaisozuikan* 9 (Kosei Publishing Co. 1997), pp34-35

Living the Lotus
Vol. 151 (April 2018)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Eriko Kanao
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly by Rissho Kosei-kai International, Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य सस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एव कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस्: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

President's Message

पूर्ण सद्भावयुक्त व्यक्ति बनना

निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट, रिश्शो कोसेइ काइ

अभिवादन के साथ

किसी कार्यस्थल में एक कर्मचारी अति विनम्रता के साथ अपनी सुबह की शुभकामनाएँ देता था। वह अपने सहकर्मी से आँखे मिलाकर देखता था और सुबह की शुभकामनाएँ देते हुए धीरे धीरे सर नवाता था।यह छोटी सी बात है, लेकिन कुछ सहकर्मी उसके अत्यधिक विनम्र व्यवहार को व्यस्त सुबह के बीच में खलल डालना मानते थे।

कुछ समय बाद कार्यस्थल का वातावरण बदलने लगा। वे लोग जो एक-दूसरे के पास से गुज़रते समय अभी तक केवल "हाय" कहा करते थे, आँखे मिलाकर देखते और शुभकामनाओं का आदान प्रदान करते हैं और कार्यस्थल का वातावरण क्रमशः अधिक शान्त हो गया है।

पूर्ण सद्भाव में होने से व्यक्तित्व की गुणवत्ता का संकेत मिलता है जो "पूरी तरह से संतुष्ट है और खामियों या दोषों से रहित है।" इसलिए, जब हम वैसा व्यक्ति बनने की बात करते हैं, मकसद होता है आदर्श मानव के सदृश बनना है, जो बौद्ध धर्मानुयायी के लिए बुद्ध के समान बनना है।फिर भी, मैं नहीं सोचता हूँ कि यह आदर्श कुछ दूर का यह लक्ष्य है।

यदि हम मानते हैं कि बुद्ध और बोधिसत्व का कार्य लोगों के मन को शांति और संतुष्टि देता है, जिससे उन्हें दूसरों के साथ मिलकर चलने और साथ ही साथ वातावरण मे समन्वय का भाव लाने की प्रेरणा मिलती है। **जो एक सुबह की शुभकामनाओं के साथ, लोगों के मन को प्रभावित करता है और कार्यस्थल में सामंजस्य लाता है, वह व्यक्ति पूर्ण सद्भाव से ओतप्रोत है। यद्यपि हम मानव प्राणियों में बहुत सी खामियाँ** हैं, इसे हम साक्ष्य मान सकते हैं कि हममें बुद्ध स्वभाव निहित है।उसी तरह, जब भी हम नए मुठभेड़ों का सामना करते हैं, जैसे कि स्कूल या कार्यस्थल में, हम यह कह सकते हैं कि इन मानव संबंधों को सामंजस्यपूर्ण बनाने में अभिवादन का आदान-प्रदान के माध्यम से दूसरों में बुद्ध स्वभाव के प्रति सम्मान प्रकट करना है।

लोग जो दुःख संताप को जानते हैं

मानव स्वभाव का सार बुद्ध- स्वभाव है; और कई कहानियाँ हैं जो हमें दिखाती हैं कि मानव स्वभाव स्वाभाविक रूप से सही और सामंजस्यपूर्ण है। एदो काल की अवधि में, जापान के वर्तमान नारा प्रिफेक्चर के योशिनो में, सेइकुरो नाम का एक व्यक्ति रहता था जो जोदो शिन (True Pure Land) संप्रदाय का एक धर्मनिष्ठ भक्त था। (जोदो शिन संप्रदाय के सेइकुरो जैसे धर्मनिष्ठ भक्त को म्योकोनिन कहते हैं; जिसका शाब्दिक अर्थ अपूर्व उत्कृष्ट लोग है।) जब व्यक्ति घर से बाहर जा चुका था, उसके घर से रूपये पैसे की चोरी हो गयी, सेइकुरो ने कहा,

"कोई भी जो मेरे घर में चोरी करने के लिए प्रवेश करेगा, वह बड़ी कठिनाई में होगा।मुझे खुशी है कि उस व्यक्ति के लिए मेरे घर में कुछ रूपये पैसे होने लगे हैं।" उसने फिर कहा, "बुद्ध की करुणा द्वारा पोषित एक 'व्यक्ति के रूप में विकसित हूँ जो लूटा गया है।' अब कुछ भी मुझे खुश नहीं कर सकता है।"

एक और धर्मनिष्ठ भक्त, ओसाका के मोनोदाने किचिबेइ ने कहा है, "जब समय अच्छा है, कोई भी खुश हो सकता है। लेकिन तुम जिन कठिनाइयों का सामना कर सकते हो, उन कठिनाइयों के आधार में बुद्ध धर्म है।." उनके कथन से हमें जानकारी मिलती है कि हमें सिखाया जाने वाला "कृतज्ञता के बीज" के बोध का आनंद, जो हमें कठिनाइयों का सामना कर मिलता है, वही सर्वोच्च आनंद और विश्वास का सही मूल्य है।

इन दोनों पुरुषों के मन में कुछ भी नहीं था सिवाय अपने जीवन के लिए बुद्ध के प्रति उनका आभार और अन्य लोगों के प्रति उनका दयाभाव। सम्पूर्ण विकसित व्यक्तित्व की गुणवत्ता में पूर्ण संतुष्टि और किसी दृष्टि से रिक्तता भाव का नहीं रहना है और यह कहा जा सकता है कि इस गुणवत्ता में संतोष की गर्म भावना के अलावा कृतज्ञता के साथ जो कुछ घटता है उसका सामना करने की क्षमता है।

अकस्मात्, उपरोक्त सेइकुरो के पिता का जल्दी ही निधन हो गया था। अपनी माँ के साथ गरीबी में रहते हुए, उसे पत्नी मिली, लेकिन जब वह केवल तेंतीस वर्ष की थी, उसकी मृत्यु हो गई।हूबहू, क्योंकि उसे पूरे तौर से दुःख संताप अनुभव हुआ, वह लोगों के दिलों के दर्द को अच्छी तरह समझा।और यह समझ उनकी करुणा का स्रोत बन गया, जिसने अन्य लोगों की सहायता करने के लिए उसमें ज्ञान भावना को जन्म दिया।

अर्ध पद्मासन में बैठे बोधिसत्व की एक मूर्ति है, जो नारा में चुगुजी मंदिर में स्थापित है, जो उसके सौम्य, हल्की मुस्कुराहट के लिए प्रसिद्ध है। साहित्यिक आलोचक कत्सुइचिरो कामेई (1907-66) ने इस मुस्कुराहट की निम्नलिखित व्याख्या की है: "यह शोक के साथ एक हो सकता है जो दुःख और उदासी से ओतप्रोत है।" दूसरे शब्दों में, बोधिसत्व के हृदय की गहराई में गहन दुःख की भावना हैं जो पूरी तरह से वर्णनातीत है।

जैसा कि बौद्ध वाक्यांश "करुणा और बुद्धि में पूर्णता (हाय ची एंमान)" में है, जो एक मानवीय स्वरूप की प्रकृति को दर्शाता है। शाक्यमुनि और, वास्तव में, हम सभी को इस लोक में जन्म लेने की इच्छा है ताकि संभवतः अधिक से अधिक करुणा और ज्ञान के प्रदर्शन का व्रत पूरा हो सके।

From Kosei, April 2018.

सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र

आठवाँ परिवर्त

पाँच सौ शिष्यों को बुद्धत्व प्राप्ति का आश्वासन

वस्त्र में मणि का दृष्टान्त

एक आदमी था जो गरीबी में जी रहा था। एक दिन वह अपने घनिष्ठ मित्र के घर गया। वह मित्र बहुत धनी था और उसने स्वादिष्ट भोजन कराया। उसने भरपूर खाना पीना किया और फिर नशे में अपने घनिष्ठ मित्र के घर गहरी नींद में सो गया।

इस बीच, उसके मित्र को आधिकारिक कार्य से बाहर जाना पड़ा। मित्र ने उपहार के रूप में उस आदमी के वस्त्र के अस्तर में एक अनमोल रत्न सिलाई करने का फैसला किया, क्योंकि वह जानता था कि वह आदमी गरीबी में डूब गया था। चूँकि आदमी गहरे नींद में सो रहा था, इसलिए उसने नहीं देखा कि क्या हो रहा था।

नींद टूटने के बाद, गरीब आदमी अपने मित्र के घर से निकल गया। इधर उधर भटकते हुए वह किसी दूसरे देश में पहुँच गया, जहाँ उसे भोजन और वस्त्र के लिए कड़ी मेहनत करना पडा।फिर भी वह जो कुछ मिल जाता था, उससे संतुष्ट था।एक दिन, वह सड़क पर अपने धनी मित्र से टकरा गया। गंदे जीर्ण-शीर्ण वस्त्र में देखकर मित्र आश्चर्यचकित रह गया। उसने उसे वस्त्र में छिपे मणि के बारे में बताया, और उसे दिखाया। वह आदमी प्रसन्न हुआ, और मणि के लिए धन्यवाद किया, जिससे वह गरीबी और अभाव के जीवन से मुक्त था।

व्याख्या

जो आदमी गरीबी में था वह साधारण लोगों का प्रतीक है। उसका घनिष्ठ मित्र बुद्ध के और अनमोल रत्न एक यान की धर्मदेशना का प्रतीक है। साधारण लोग जो जीवन में दुःखों से पीड़ित थे बुद्ध ने उन लोगों के उद्धार के लिए विभिन्न धर्मदेशनाओं का उपदेश किया। बुद्ध की सभी धर्मदेशनायें सभी मनुष्यों को बुद्धत्व की ओर अग्रसर कराने के हेतु हैं। हम में से हर एक दूसरे से अलग है और जब यह स्पष्ट है कि हम सभी अलग-अलग रास्ते चल रहे हैं,वास्तव में हममें बुद्ध स्वभाव समान रूप से निहित है और हम सभी का जीवन एक विशाल जीवन के कारण हैं - हमारा जीवन उनकी कार्यशीलता का परिणाम है। इसे ही एक यान कहा जाता है।

अनजाने ही मणि से सम्पन्न रहने का अर्थ मार्ग पर पलकर बुद्ध बनना है, हालाँकि हम ऐसा करने से अनभिज्ञ हैं।

हमारा अस्तित्व ऐसा नहीं हैं जो अपरिवर्तनीय या अनन्त है, बल्कि हमारा अस्तित्व अन्योन्याश्रित है, परस्पर निर्भर है। हालाँक, हम मानते हैं कि हमारा दृष्ट रूप हमारा वास्तविक स्वरूप है जो सांसारिक इच्छाओं से अभिभूत है। जैसाकि दृष्टान्त के गरीब आदमी की तरह, भले ही हम स्वादिष्ट खान-पान से कुछ क्षण के लिए संतुष्ट हों, लेकिन जब हालात बदल जाता है हम शीघ्र गरीबी की अवस्था में आ जाते हैं, और इस तरह हम एक पूर्ण जीवन प्राप्त नहीं कर सकेंगे।

इसलिए बुद्ध ने प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धांत की व्याख्या की और हमें स्वार्थपरक इच्छाओं से मन को मुक्त करके आंतरिक शांति की प्राप्ति के मार्ग की ओर प्रवृत किया है। ऐसी अवस्था (दो यानों का निर्वाण) गरीब व्यक्ति की अवस्था की तरह है जो अपने छोटे मोटे काम से मिली छोटी आय से संतुष्ट है।

जब गरीब आदमी की अपने मित्र से अनायास ही भेंट हो गई, उसने उससे मणि की बात बताई। इसका अर्थ है कि बुद्ध की हमें भविष्यवाणी है कि हम सब भी बुद्ध बन सकते हैं।

वस्त्र में रत्न केवल स्वयं के लिए आध्यात्मिक शांति का प्रतीक नहीं है। यह अनमोल रत्न है, जो एक यान की धर्मदेशना को दर्शाता है। यद्यपि धर्मदेशना को जानकर हमें एहसास हुआ कि जिस मार्ग पर हम चले रहे हैं वह बुद्ध बनने के मार्ग से जुड़ा है। बुद्ध बनने का मार्ग जीवन का मार्ग है जिसमें हम हमेशा चारों ओर के लोगों को खुश रखने की इच्छा है और इस लक्ष्य (बोधिसत्व पथ) को प्राप्त करने के लिए सर्वोत्तम प्रयास करते हैं। जीवित रहने का तरीका यह दर्शाता है कि हमें उनके समान होना चाहिए जो बुद्ध के जीवन के अनुरूप रहने वाले लोग हैं। यदि आपको मणि होने का बोध है, आप जहाँ कहीं भी हैं आप निश्चित रूप से प्रकाश होंगे जो दूसरों को और समाज को प्रकाश देगा, क्योंकि आपके पास मणि है।

Editorial Supervision by Chuo Academic Research Institute

*Commentary is based on *Buddhism for Today* and *The Threefold Lotus Sutra: A Modern Commentary*, both by Nikkyo Niwano.

अभिवादन का आदान प्रदान बुद्ध स्वभाव के प्रति नमन प्रकट करना है

हाल ही में मुझे टोकियो के आयोयामा गाकुइन विश्वविद्यालय के ट्रैक और फील्ड क्लब के निदेशक डॉ योशिहिदे उचियामा का भाषण सुनने का अवसर मिला, जिन्होंने चार लगातार वर्षों में हाकोने एकिडेन लंबी दूरी की रिले दौड़ जीता है।

उन्होंने हमसब से कहा, जब अच्छे एथलीटों को ऊपर उठाने की समस्या आती है, कहने की आवश्यकता नहीं है कि उनके रिकॉर्ड को बेहतर बनाने में उनकी सहायता करना महत्वपूर्ण है, परन्तु उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है उन्हें अपने चरित्र के संवर्धन में और अच्छे मनुष्य के रूप में विकसित होने में मदद करना है।

उन्होंने यह भी कहा कि क्लब के सदस्यों ने अपने लिए कुछ नियम बनाये हैं, जिसमें हुआ अभिवादन का आदान प्रदान करना, जूतों को छात्रावास में प्रवेश द्वार पर करीने से संभाल कर रखना और स्वेच्छा से छात्रावास के आस पास की सड़क की सफाई करना शामिल है। इन नियमों का पालन करते हुए उनके मन में दूसरों का ख्याल रखने का भाव विकसित हुआ है और टीमवर्क की भावना स्थापित हुई है।

हम रिश्शो कोसेइ काइ के सदस्य गण दैनिक जीवन के तीन नियमों में एक अभिवादन के आदान प्रदान के महत्व को समझते हैं।डॉ उचियामा ने जो कुछ, उससे अभिवादन के आदान प्रदान के महत्व पुनः ताजा हो गया है।

अप्रील में प्राथमिक विद्यालय के प्रथम श्रेणी में विद्यार्थियों के अभिवादन का हंसमुख आदान-प्रदान को सुना।यद्यपि अभिवादन का आदान-प्रदान रोजमर्रे की सामान्य घटना है। हमें आशा है कि हम इसका दिल से अभ्यास करेंगे, हमेशा दूसरों की देखभाल करेंगे।

रेवरेन्ट कोईची साइतो
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल

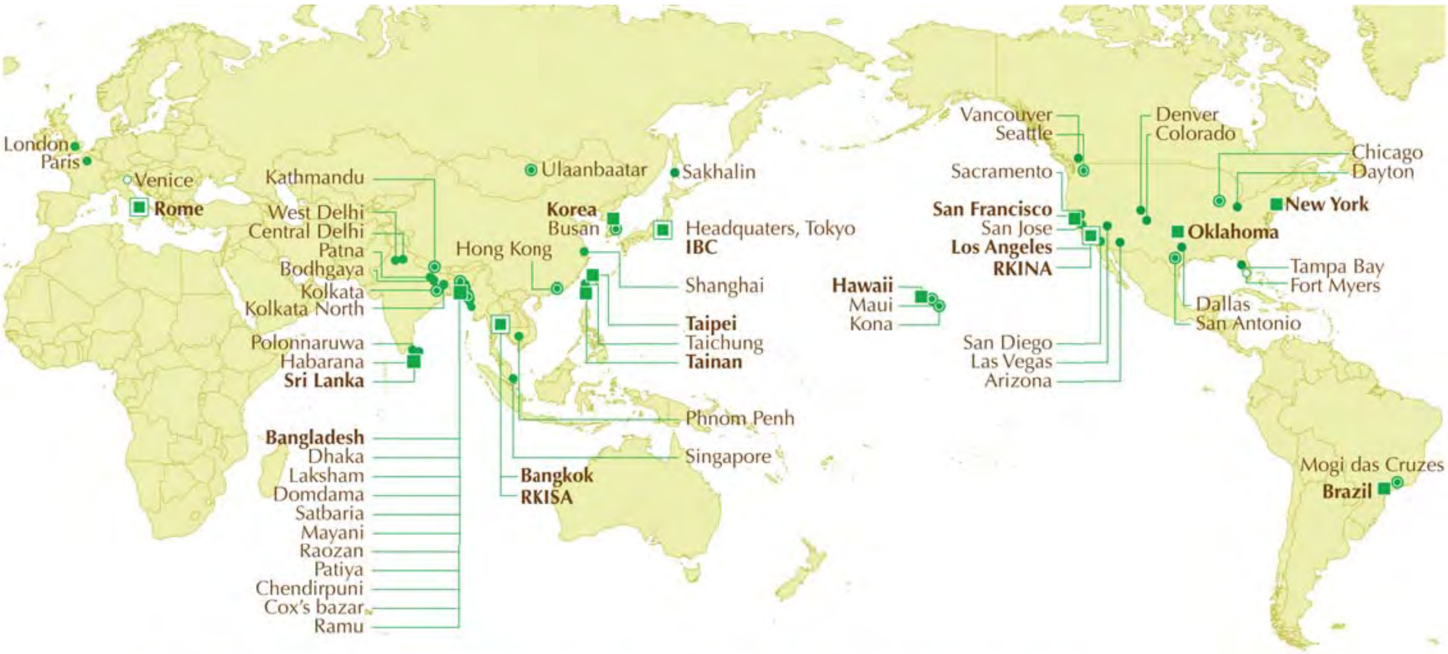

RISSHO KOSEI-KAI INTERNATIONAL BRANCHES

We welcome comments on our e-newsletter Living the Lotus. Please send us your comments to the following e-mail address.
E-mail: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Rissho Kosei-kai Overseas Dharma Centers 2018

Rissho Kosei-kai International
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 *Fax:* 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)
2707 East First Street Suite #1 Los Angeles CA 90033 U.S.A
Tel: 1-323-262-4430 *Fax:* 1-323-262-4437
e-mail: info@rkina.org http://www.rkina.org

Branch under RKINA

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center
28621 Pacific Highway South, Federal Way,
WA 98003 U.S.A.
Tel: 1-253-945-0024 *Fax:* 1-253-945-0261
e-mail: rkseattlewashington@gmail.com
http://buddhistlearningcenter.org/

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio
6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.
P.O. Box 692148, San Antonio, TX78269, USA
Tel: 1-210-561-7991 *Fax:* 1-210-696-7745
e-mail: dharmasanantonio@gmail.com
http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai of Tampa Bay
2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.
Tel: (727) 560-2927 *e-mail*: rktampabay@yahoo.com
http://www.buddhismtampabay.org/

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii
2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.
Tel: 1-808-455-3212 *Fax:* 1-808-455-4633
e-mail: info@rkhawaii.org http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center
1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.
Tel: 1-808-242-6175 *Fax:* 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center
73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona,
HI 96740 U.S.A.
Tel: 1-808-325-0015 *Fax:* 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles
2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
Tel: 1-323-269-4741 *Fax:* 1-323-269-4567
e-mail: rk-la@sbcglobal.net http://www.rkina.org/losangeles.html

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco
1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.
Tel: 1-650-359-6951 *Fax:* 1-650-359-6437
e-mail: info@rksf.org http://www.rksf.org

Rissho Kosei-kai of Sacramento
Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York
320 East 39th Street, New York, NY 10016 U.S.A.
Tel: 1-212-867-5677 *Fax:* 1-212-697-6499
e-mail: rkny39@gmail.com http://rk-ny.org/

Rissho Kosei-kai of Chicago
1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056 U.S.A.
Tel : 1-773-842-5654 *e-mail:* murakami4838@aol.com
http://home.earthlink.net/~rkchi/

Rissho Kosei-kai of Fort Myers
http://www.rkftmyersbuddhism.org/

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma
2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112 U.S.A.
Tel & Fax: 1-405-943-5030
e-mail: rkokdc@gmail.com http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai, Dharma Center of Denver
1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204 U.S.A.
Tel: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton
425 Patterson Road, Dayton, OH 45419 U.S.A.
http://www.rkina-dayton.com/

Risho Kossei-kai do Brasil
Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,
CEP 04116-060 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377
Fax: 55-11-5549-4304
e-mail: risho@terra.com.br http://www.rkk.org.br

Risho Kossei-kai de Mogi das Cruzes
Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,
CEP 08730-000 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377

Rissho Kosei-kai of Taipei
4F, No. 10 Hengyang Road, Jhongjheng District,
Taipei City 100 Taiwan
Tel: 886-2-2381-1632 *Fax:* 886-2-2331-3433
http://kosei-kai.blogspot.com/

Rissho Kosei-kai of Taichung

Rissho Kosei-kai of Tainan
No. 45, Chongming 23rd Street, East District,
Tainan City 701 Taiwan
Tel: 886-6-289-1478 *Fax:* 886-6-289-1488

Rissho Kosei-kai of Pingtung

Korean Rissho Kosei-kai
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
Tel: 82-2-796-5571 *Fax:* 82-2-796-1696
e-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
Tel: 82-51-643-5571 *Fax:* 82-51-643-5572

Branches under the Headquarters

Rissho Kosei-kai of Hong Kong
Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,
North Point, Hong Kong, Republic of China

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar
15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
Tel: 976-70006960 *e-mail:* rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Sakhalin
4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation
Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai di Roma
Via Torino, 29-00184 Roma, Italia
Tel & Fax : 39-06-48913949 *e-mail:* roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK
Rissho Kosei-kai of Venezia
Rissho Kosei-kai of Paris

International Buddhist Congregation (IBC)
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1230 *Fax:* 81-3-5341-1224
e-mail: ibcrk@kosei-kai.or.jp http://www.ibc-rk.org/

Rissho Kosei-kai of South Asia Division
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax*: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax*: 66-2-716-8218
e-mail: thairissho@csloxinfo.com

Branches under the South Asia Division

Rissho Kosei-kai of Central Delhi
224 Site No.1, Shankar Road, New Rajinder Nagar, New Delhi,
110060, India

Rissho Kosei-kai of West Delhi
66D, Sector-6, DDA-Flats, Dwarka, New Delhi 110075, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata
E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North
AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center
Ambedkar Nagar, West Police Line Road
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Kathmandu
Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur,
Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh
#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

Rissho Kosei-kai of Patna Dharma Center
Rissho Kosei-kai of Singapore

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218 *e-mail:* info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei-kai of Bangladesh
85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai of Dhaka
House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh
Tel: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai of Mayani
Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station: Mirshari,
District: Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Patiya
Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Domdama
Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar
Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Satbaria
Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Laksham
Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Raozan
West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Chendirpuni
Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Ramu

Rissho Kosei Dhamma Foundation, Sri Lanka
No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
Tel: 94-11-2982406 *Fax*: 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Habarana
151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Other Groups

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai